E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मराठा साम्राज्य के मजबूत स्तम्भः महादजी सिंधिया (1727–1794 ई.)

यजबीर सिंह
पी.एच.डी. शोधार्थी (इतिहास)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मुरैना (म.प्र.)
डॉ. जितेन्द्र शर्मा
प्राचार्य पं. श्यामाचरण उपाध्याय
महाविद्यालय, जौरा खुर्द
मुरैना (म.प्र.)

Paper Rcevied date
05/04/2025
Paper date Publishing Date
10/04/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15289535

IMPACT FACTOR
5.924

ABSTRACT

इस प्रकार महादजी सिंधिया का जीवनकाल उत्साहपूर्ण कार्यशीलता का लम्बा समय है। महादजी महान् राजनीतिज्ञ, दुरदर्शिता से सम्पन्न, चतुराई एवं रणनीति में कुशल थे। पेशवा परिवार के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने में महादजी कभी पीछे नहीं हटते थे। रानोजी सिंधिया के पांच पुत्रों में वे सबसे योग्य पुत्र साबित हुये। उन्होंने पानीपत के युद्ध में खोई हुई मराठा प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त किया। निर्वासित मुगल बादशाह को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया। इसके अलावा उन्होंने अपने सीमित साधनों का सफलतापूर्वक प्रयोग करके एक छोटी किन्तु प्रशिक्षित सेना तैयार की जिसके बल पर उसने उत्तर भारत के उन क्षेत्रों को जीता जो उन्होंने पानीपत युद्ध के बाद गवां दिये थे। प्रथम–आंग्ल मराठा युद्ध में उन्होंने अपने पराक्रम का परिचय देते हुये अंगेजो को धूल चटा दी। इसके अतिरिक्त उन्होंने रघुनाथ राव की शक्ति को भी समाप्त करने का कार्य किया जो लम्बे समय से पेशवा शक्ति को कमजोर करने का कार्य कर रहा था। अपनी योग्यता के बल पर महादजी सिंधिया ने मुगलों के सर्वोच्च पद वकील–ए–मुतलक प्राप्त किया इसके अलावा उन्होंने रूहेलों से बदला लिया और दिल्ली के आर्थिक संकट को दुरस्त किया, उत्तर भारत की स्थानीय शक्तियों जैसे रूहेलों, राजपूत, सिख, जाट, भट्टियों इत्यादि को भी पराजित किया। 12 फरवरी 1794 ई को इस महान मराठा सरदार की मृत्यु हो गई। इस प्रकार महादजी अपनी मृत्यु तक मराठा साम्राज्य के लिये एक मजबूत स्तम्भ बने रहे।

सिंधिया परिवार का जीवन परिचय :–

इतिहास में बहुत से ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अपनी कार्यक्षमता से इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ देते हैं उन्हीं व्यक्तित्व के धनी मराठा सरदार महादजी सिंधिया थे। ये सिंधिया वंश से संबंधित थे जो कि महाराष्ट्र में एक प्रतिष्ठित वंशों में से एक था किन्तु धीरे–धीरे इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। महादजी सिंधिया रानोजी के पांच पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र थे। (1)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रामचन्द्र बाबा सुखयंकर पेशवा बाजीराव प्रथम के यहाँ एक अनुभवी एवं प्रमुख राजनायक थे। उन्होंने रानोजी सिंधिया की योग्यता को पहचाना और उन्हें पेशवा का सेवक नियुक्त किया। (2) यहां उनका कार्य था कि जब भी पेशवा किसी महाराजा से मिलने जाते तो उनके बाहर रखे जूतों की देखभाल करनी थी और जब पेशवा वापिस आयें तो उन्हें जूते पहनाना था। ऐसे ही काफी समय तक चलता रहा लेकिन एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि पेशवा को महाराज से बातचीत में काफी समय लग गया और रात हो गई। रानोजी को नींद लग गई लेकिन नींद में भी उन्होंने पेशवा के जूतों को दोनों हाथों से पकड़कर अपनी छाती से लगा लिया। पेशवा जब बाहर आये तो उन्हें रानोजी को सोता हुआ पाया। लेकिन वे इस अवस्था में भी जूतों की इस तरह सुरक्षा देखकर वह रानोजी से काफी प्रभावित हुआ। इस घटना से रानोजी की किस्मत चमक गई। पेशवा बाजीराव प्रथम के आशीर्वाद से उनके पद एवं प्रतिष्ठा दोनों में वृद्धि हुई। अब वे सेना में पहले सिपाही और बाद में सेनानायक बन गये। अब उन्हें दूर के क्षेत्रों से युद्ध के लिये भी भेजा जाने लगा। वे एक अनुभवी, योग्य पुरूष तो थे ही अतः उन्हें जो दायित्व सौंपा जाता उसे बड़ी ईमानदारी से करते थे। इसी कारण बाद के पेशवाओं की भी कृपादृष्टि उन पर बनी रही। पेशवा ने मालवा विजय करने के लिए सेना दो प्रधान शिलेदार रानोजी सिंधिया और मल्हार राव होल्कर के नेतृत्व में भेजी। दोनों ने मिलकर मालवा को जीत लिया इसी खुशी में पेशवा ने मालवा की जागीर को बांट दिया। मालवा के मध्य और दक्षिण का हिस्सा पवारों को दिया। उत्तरी मालवा रानोजी को एवं दक्षिणी मालवा की जागीर मल्हार राव होल्कर को दी गई। रानोजी सिंधिया ने उत्तरी मालवा की राजधानी प्रारम्भ में उज्जैन को बनाया बाद में ग्वालियर को बनाया। (3)

रानोजी जब अपनी प्रगति पथ पर थे और उनके समय लगभग आधा मालवा मराठों के अधिकार में आ चुका था इसी समय 19 जुलाई 1745 ई. को इस वीर मराठा सरदार की मृत्यु मालवा के राजापुर नामक जगह पर हो गई। रानोजी की दो पत्नियाँ थी एक का नाम था मैनाबाई और दूसरी का नाम चिमाबाई था। मैनाबाई से तीन पुत्र हुये थे– ज्याप्पाजी, दत्ताजी, ज्योतिबा आदि। दूसरी पत्नी चिमाबाई से दो पुत्र तुकोजी और महादजी सिंधिया हुये। महादजी के जन्म वर्ष से लेकर इतिहासकारें में मतभेद है। सरदेसाई के अनुसार इनका जन्म 1727 ई. में हुआ। ज्यादात्तर इतिहाकार यही वर्ष बताते है। चिमाबाई एक राजपूत महिला थी, इसी कारण महादजी सिंधिया की नसों में मराठों व राजपूतों दोनों का रक्त दौड़ता था। रानोजी के पांचों पुत्र उन्हीं की तरह बहादूर, वफादार एवं साहसी थे। इससे सिंधिया वंश की प्रतिष्ठा बढ़ी और उन्होंने पेशवाओं के दरबार में अपनी योग्यता के बल पर ख्याति प्राप्त की। पानीपत की 14 जनवरी 1761 ई. की लड़ाई तक महादजी सिंधिया अपने भाइयों की छत्रछाया में ही कार्य कर रहे थे। इस पानीपत के युद्ध तक रानोजी सिंधिया के पांच पुत्रों में से चार पुत्रों की मृत्यु हो चुकी थी। पानीपत युद्ध में महादजी सिंधिया थे जो बच सके। चाणक्य ने भी कहा है कि व्यक्ति के अन्दर शेर और लौमड़ी दोनों के गुण होने चाहिये महादजी सिंधिया ने यही किया पानीपत युद्ध में मराठों की निश्चित हार देखकर उन्होंने युद्ध स्थल से सुरक्षित बच निकलना ही सही समझा जो बाद में मराठा साम्राज्य के लिए एक सही निर्णय साबित हुआ। (4) पानीपत की लड़ाई में अफगानों से मिली हार में मराठा की पूरी पीढ़ी ही समाप्त हो गई थी।

महादजी सिंधिया की पानीपत के युद्ध से बच निकलने की कहानीः–

महादजी सिंधिया की पानीपत से बच निकलने की कहानी काफी रोचक है। जब महादजी सिंधिया को पानीपत की लड़ाई में किसी प्रकार की कोई उम्मीद नहीं दिखी तो उन्होंने घायल अवस्था में ही अपना रास्ता दक्षिण की तरफ मोड़ लिया। महादजी का पीछा एक अफगानी ने किया। कुछ दूरी पर चलने के बाद महादजी की घोड़ी गड्डा होने के कारण गिर गई जिससे अफगानी भी शीघ्र वहाँ पहुँच गया। उसने महादजी की टांग पर जोरदार प्रहार किया और उसे वस्त्र विहिन कर दिया अब महादजी जीवन भर के लिये एक टांग से अपंग हो गये और गहरे घाव से खून बहने व ठण्ड के कारण यह लग रहा था कि वे अपने प्राण दे देंगे किन्तु इसी समय रानेखाँ नामक एक मुस्लिम भिश्ती वहाँ से अपने बैल लिये हुये जा रहा था। उसने महादजी को घायल अवस्था में देखा तो उसे उस पर दया आ गई और उन्हें बैल के सहारे सुरक्षित स्थान पर ले गया। महादजी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

का जीवन अब पूर्ण रूप से सुरक्षित था। महादजी ने इस कार्य के लिए रानोखाँ का शुक्रिया अदा किया और उन्हें जीवन भर के लिये अपना भाई बना लिया। इसके साथ–साथ उन्हें अपना सेनानायक भी नियुक्त किया। (5)

रानोजी सिंधिया की विरासत के उत्तराधिकारीः–

रानोजी के चार पुत्रों की मृत्यु के बाद उत्तर मालवा की जागीर के स्वामी का मामला उठा। बालाजी बाजीराव के बाद पेशवा माधवराव बने। इस समय इनकी उम्र कम थी इसलिए उनके चाचा रघुनाथ राव सब राजकार्य संभाल रहे थे। रघुनाथ राव का माधवराव से भी खिंचतान चलती रहती थी। रघुनाथ राव महादजी सिंधिया से भी ईर्ष्या करता था इसी कारण वह उत्तर मालवा की जागीर महादजी को न देकर केदारजी को देना चाहता था लेकिन अंततः माधवराव ने उत्तर मालवा की जागीर महादजी सिंधिया को सौंप दी। (6)

महादजी द्वारा अपनी स्थिति को मजबूत बनानाः–

इस समय महादजी सिंधिया के कंधो पर कई बड़े दायित्व थे, सर्वप्रथम उन्हें अपनी सैन्य स्थिति को सही करना था। इसके अलावा पानीपत युद्ध में मराठों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करना था। इसके अतिरिक्त उन्हें पेशवा की स्थिति को भी मजबूत बनाना था। रघुनाथ राव स्वयं पेशवा पद प्राप्त करने के लिये पेशवा को हटाने का अवसर ढूंढ रहा था उससे भी पेशवा की रक्षा करना थी। यह कार्य असाधारण थे लेकिन इन्हें पुरा करने का बीड़ा महादजी ने उठाया। (7)

इस समयकाल में महादजी ने मालवा तथा राजस्थान में मराठा हितों को सुरक्षित रखने का प्रसास किया। उसने अल्प साधनों का सावधानीपुर्वक इस्तेमाल करके एक छोटी लेकिन सशक्त सेना का निर्माण किया जिसे वह नियमित रूप से वेतन देता था। इस प्रकार महादजी ने अपनी सैन्य स्थिति को अब मजबूत बना लिया था। उसने अपने वफादार व्यक्तियों को गुप्तचर के कार्य में लगा रखा था। इस पर राधोराम पागे नामक उसके एक सहयोगी ने 17 अगस्त 1765 ई को एक पत्र में लिखा है कि यहां पर महादजी के पास वफादार सैनिकों का एक जत्था है जो उसके लिये अपने प्राणों की आहूति देने के लिये तैयार है। इस प्रकार 1761 से 1768 ई. के अन्त तक का लगभग 8 वर्ष का यह समयकाल महादजी के जीवन का एक प्रशिक्षण काल कहा जा सकता है। (8)

अब पेशवा की स्थिति में भी दिनोदिन सुधार हो गया था। पेशवा ने अब उत्तरी अभियान के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सेनापति दल को तैयार किया। इस दल में रामचन्द्र गणेश, विसाजी कृष्ण बिनीवाले, महादजी सिंधिया और तुकोजी होल्कर इत्यादि को तैयार किया। (9)

विसाजी कृष्ण बिनीवाले और रामचन्द्र गणेश के अधीन लगभग 20000 सवार सैनिक थे। इसमें पेशवा की प्रमुख सेना के 15000 सवार भी शामिल थे। महादजी सिंधिया और तुकोजी होल्कर के अधिकार ने लगभग 15–15 हजार के सैनिक दस्ते थे। कुल मिलाकर मालवा में सवार सैनिको की संख्या 50000 के लगभग हो गई थी। इसके आलावा तोपखाना और बहुत बड़ी संख्या में पैदल सैनिक भी शामिल थे। (10) इस सम्पूर्ण सेना का नेतृत्व विसाजी कृष्ण बिनीवाले कर रहे थे क्योंकि उन्होंने कर्नाटक अभियान में अच्छा पराक्रम दिखाया था। (11) महादजी सिंधिया व तुकोजी होल्कर को कुछ समय पहले ही उत्तरी अभियान पर भेज दिया था। (12)

इस समय उत्तर भारत में प्रमुख शक्तियाँ राजपूत, जाट, सिख, रूहेले इत्यादि थी। राजपूत राजपूताना क्षेत्र जैसे बूँदी, कोटा, जयपुर इत्यादि क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाऐ हुये थे। जाट भरतपुर, आगरा एवं मथूरा में अपना प्रभाव बढाये हुये थे। इसके

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अलावा अन्य शक्ति सिखों का क्षेत्र पंजाब व उत्तरी हरियाणा था। रूहेले अपना प्रभाव रूहेलखण्ड क्षेत्र में बनाये हुये थे। दिल्ली का मुगल बादशाह इलाहाबाद में ब्रिटिश संरक्षण में रह रहा था। उसकी दिल्ली की गद्दी पुनः प्राप्त करने की इच्छा थी पर उसका फिलहाल कोई सहयोग नहीं कर रहा था।

संयुक्त मराठा सेना ने सर्वप्रथम राजपूताना क्षेत्र पर धावा बोला और बूँदी, कोटा, जयपुर के राजाओं को पराजित कर उससे बकाया राशि वसूल की। इसके बाद मराठो ने जाटों के क्षेत्र में प्रवेश जहाँ सुरजमल की मृत्यु के बाद यहाँ उत्तराधिकार की लड़ाई चल रही थी। अतः मराठों ने लम्बे संघर्ष के बाद यहाँ के राजाओं को पराजित कर आगरा व मथुरा पर अधिकार कर लिया। मराठों को जाट राज्यों से 65 लाख रूपये की प्राप्ति हुई। (13)

मराठों की बढ़ती शक्ति से रूहेला सरदार नजीबुद्यौला भयभीत हो गया क्योंकि पानीपत के युद्ध में इसने अहमद शाह अब्दाली का साथ दिया था। अब्दाली और मराठों के बीच समझौता हो सकता था। लेकिन इसने ऐसा होने नहीं दिया जिससे मराठों को जन–धन की भारी क्षति उठानी पड़ी। नजीबुद्यौला यह भली–भाँति जनता था कि मराठें अपने सगे संबंधियों की मौत का बदला जरूर लेगें। इसी कारण अपने मराठों से समझौते की बातचीत की। (14) विसाजी कृष्ण नजीबुद्यौला से समझौते के पक्ष में थे किन्तु महादजी सिंधिया इसके पक्ष में नहीं थे क्योंकि इसकी वजह से उसने अपने भाइयों को खोया था। उधर यह समझौते का प्रस्ताव जब पेशवा माधवराव के पास पहुँचा तो उन्होंने नजीबुद्यौला से समझौता करना ही अपने हित में बताया महादजी सिंधिया ने पेशवा के आदेश का पालन किया। (15)

31 अक्टूबर 1770 ई. में नजीबुद्यौला की मृत्यु हो गई। (16) इनकी मृत्यु के बाद और समझौते के तहत इनके पुत्र जाबित खाँ को मराठों की शरण में रहना पड़ा, किन्तु यहाँ मराठों में आपसी फुट देखने को मिली जिसका लाभ रूहेला सरदार जाबित खाँ को मिला। तुकोजी होल्कर ने जाबित खाँ को मराठा कैद से रिहा कर दिया। जाबित खाँ कैद से रिहा होकर दिल्ली पहुँचा जहाँ उन्होंने मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय से जबरदस्ती मीर बख्शी का पद हासिल किया और इस ओहदे पर रहते हुये रामचन्द्र गणेश के विरूद्ध अभियान किया। यहाँ पर रामचन्द्र गणेश व महादजी ने मिलकर रूहेलों को पराजित करके उन क्षेत्रों पर अधिकार किया जिन क्षेत्रों पर उनका पानीपत युद्ध से पूर्व अधिकार था। यहाँ यह बात भी साबित हो गई कि महादजी का नजिबुद्यौला से समझौता न करने का दृष्टिकोण उचित था। (17) चूँकि नजिबुद्यौला के साथ समझौते का विचार तुकोजी होल्कर व रामचन्द्र गणेश का था और इन्हीं के कारण मराठों में फूट बढ़ रही थी इसी कारण पेशवा ने इन्हें वापिस बुला लिया अब विसाजी कृष्ण की ही जिम्मेदारी सौंपी गई। (18)

मराठों का दिल्ली पर अधिकार :–

इधर ब्रिटिश शक्ति भी भारत में धीरे–धीरे अपने पांव जमा रही थी। 1757 ई. में प्लासी और 1764 ई. को बक्सर की लड़ाई में ब्रिटिश कंपनी को विजय प्राप्त होने से बंगाल में उन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। अब वह दिल्ली पर अपना प्रभुत्व बढ़ाने का अवसर देख रहे थे लेकिन उनको यह भी पता था कि इनकी इस राह में मराठे रोड़ा अटका सकते हैं। जैसे कि– पहले बताया गया था कि मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय अंग्रजो के संरक्षण में इलाहाबाद रह रहा था। वह अब दिल्ली की गद्दी को प्राप्त करना चाहता था। इस कार्य के लिये उसने महादजी सिंधिया से सहायता मांगी जिसे महादजी ने स्वीकार किया। (19)

मराठे भी यह इच्छा रखते थे कि दिल्ली की गद्दी पर जो बादशाह बैठे वह नियमित रूप से मराठों को रूपया देते रहें। इससे केन्द्रिय शक्ति भी मजबूत होगी जिससे विदेशी शक्ति का भारत में अपने पांव जमाने का अवसर भी नहीं मिलेगा। मराठों ने अब

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अपना रूख दिल्ली की तरफ किया। इससे रूहेलों द्वारा स्थापित किलेदार कासिम अली घबरा गया और उसने बिना लड़े ही घुटने टेक दिये। (20) मराठों ने सम्राट शाहआलम से समझौते के तहत 2 अगस्त 1771 ई को दिल्ली का किला उनके दूत सैफुद्दीन मोहम्मद के हवाले कर दिया। (21)

इस प्रकार जब मराठों के दिल्ली पर अधिकार की सूचना पूना दरबार में पहुँची तो यहां खुशी छा गई। मराठों को अब अनुभव होने लगा कि हमने पानीपत में जो भी गवाया था अब वह पुनः प्राप्त हो रहा है। इस उपलब्धि का श्रेय महादजी सिंधिया व विसाजी कृष्ण को दिया जाता है।

मुगल बादषाह शाहआलम द्वितीय की ताजपोषी–

बादशाह शाहआलम द्वितीय ने अब इलाहाबाद से दिल्ली के लिये प्रस्थान करने की तैयारियां शुरू कर दी थी। बादशाह ने अंग्रेजो से विदाई ली और कुछ दूरी तक अंग्रेज भी बादशाह के साथ चलें। इसके बाद 18 नवम्बर 1771 ई. को महादजी सिंधिया मुगल बादशाह के पास नबीगंज आ गया और यहीं से शाहआलम के साथ महादजी ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

6 जनवरी 1772 ई. को बादशाह शाहआलम द्वितीय ने विधिवत् रूप से राजधानी दिल्ली में प्रवेश किया। इस प्रकार मराठों की सहायता से मुगल बादशाह को सम्मानसहित अपने पुर्वजों की गद्दी पर बठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। (22)

अतः दिल्ली में मराठों ने पानीपत के पूर्व की बिगड़ी स्थिति को पुनः अपने पक्ष में कर लिया था। अब उनको चुनौती देने वाला रूहेला सरदार जापता खाँ के अलावा अब कोई नहीं बचा था। अब मराठों ने जाबिता खाँ पर धावा बोलने की योजना बनाई। जनवरी 1772 ई. में 10000 की मराठा सेना ने जाबिता खाँ की ओर रूख किया। मराठा सेना की कमान महादजी सिंधिया के हाथ में थी और एक छोटी सी शाही सेना मुगल सेनानायक मिर्जा नज्फ खाँ के नेतृत्व में थी। (23) जाबिता खाँ पहले मराठों से डरकर शुक्रताल भाग गया। वहाँ मराठा सेना से भिडंत के बाद उसे शुक्रताल छोड़ने के लिये मजबूर होना पड़ा। जाबित खाँ ने नजीबुद्यौला द्वारा मराठों से लूटे गये खजाने को पत्थरगढ में छिपा रखा था। यह सूचना जब मराठों को पता चली तो उन्होंने पत्थरगढ की ओर रूख किया। मराठों की इस कार्यवाही से रूहेले डर कर भागने लगे। इससे पत्थरगढ़ असुरक्षित हो गया। महादजी सिंधिया ने यहां रूहेलो के किये गये अत्याचारों का चून–चून कर बदला लिया। पानीपत के युद्ध में रूहेलों ने जो खजाना मराठों से लूटा था वह मराठों ने पत्थरगढ़ से प्राप्त किया। (24) पानीपत युद्ध में मराठों की हार के बाद सदाशिव राव भाऊ के शिविर से मराठा महिलाओं को रूहेलो ने बंदी बना लिया था, पत्थरगढ में उनको भी कैद से मुक्त कराया गया। (25) पत्थरगढ़ की विजय से मराठों को बहुत धन की प्राप्ति हुई जिसमें 2298 घोड़े सात जम्बूरक (ऊँट की पीठ पर रखी हल्की तोपें) तीन बड़ी तोपें, 1842 गाले, 100 धमाके, 530 मन बारूद और अन्य हथियार भी प्राप्त हुये। इसके अतिरिक्त 10 लाख रूपये के मुल्य का सोना चांदी व मुद्राऐं भी प्राप्त की। (26) इसी समय मराठों को सूचना मिली कि माधवराव पेशवा की मृत्यु के बाद पेशवा बने माधव नारायण राव की साजिश के तहत हत्या कर दी गई। मराठों को शीघ्र दक्षिण लौटना पड़ा। (27)

पेशवा माधवनारायण राव की मृत्यु के बाद उनकी गर्भवती पत्नी के संरक्षण के बारह भाई परिषद का गठन किया गया। इस परिषद में नाना फडनवीस, सखाराम बापू, हरिपंत फड़के इत्यादि प्रमुख थे। बाद में महादजी सिंधिया एवं तुकोजी होल्कर के वहां पहुचने पर इन्हें भी बारह–भाई परिषद का सदस्य बनाया गया। (28)

पेशवा माधवानारायण राव की हत्या में रघुनाथ राव का हाथ था क्योंकि उसे पेशवा बनने की तीव्र लालसा थी किन्तु कुछ समय बाद 16 अप्रैल 1773 ई को नारायण राव की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया इससे रघुनाथ राव की पेशवा बनने की इच्छाओं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पर पानी फिर गया। रघुनाथ अब भी शांत नहीं बैठा अब वह अंग्रजों की सहायता लेने की योजना बनाने तथा अंगेजो ने भी इस मराठाा फूट का लाभ उठाना चाहा। इसी बीच 1775–1782 ई. के बीच अंग्रजों और मराठों के बीच युद्ध हुआ जिसे प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध कहा जाता है। इस युद्ध के तहत वडगांव में अंग्रेजों की करारी हार हुई। अंग्रेजो को मजबूर होकर महादजी सिंधिया से 17 मई 1782 ई को सालबई को संधि करनी पड़ी। (29) यह संधि अंग्रेजों के लिये एक अपमान जनक संधि थी। इस संधि के बाद 20 वर्ष तक अंग्रेजो का मराठों से उलझने का साहस नहीं हुआ। यहां रघुनाथ राव को जब लगने लगा कि उनकी कोई सहायता नहीं कर रहा हैं तो उन्होंने महादजी सिंधिया के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और अपना पेशवाई पद की इच्छा का भी त्याग कर दिया। (30)

महादजी द्वारा वकील–ए–मुतलक पद की प्राप्तिः–

इस समय दिल्ली दरबार आर्थिक संकट से जूझ रहा था क्योंकि बादशाह के योग्य सेनानायक मिर्जा नजफ खाँ की अब मृत्यु हो गई थी। इसके बादइ कोई भी दिल्ली की स्थिति को सही करने वाला नहीं रह गया। इस समय बादशाह ने महादजी सिंधिया को सहायता के लिये बुलावा भेजा क्योंकि महादजी सिंधिया ही वह व्यक्ति था जो बादशाह के प्रति स्वामीभक्ति रखता था। महादजी सिंधिया ने सम्राट का आमन्त्रण स्वीकार किया और हेलना नामक स्थान पर पहुँचा जहाँ मुगल बादशाह ने 3 दिसम्बर 1784 ई. को शिविर लगाकर महादजी को मुगल दरबार का सर्वोच्च पद वकील–ए–मुतलक प्रदान किया। (31) यह पद महादजी के लिये कोई फूलों की सेज नहीं थी क्योंकि इस पद के साथ ही उनके कंधों पर सम्पूर्ण मुगल शासन का कार्यभार आ गया था। इस पद के साथ–साथ उनके नये शत्रु भी पैदा हो गये। दूसरी तरफ मुगल दरबार आर्थिक संकट का भी सामना कर रहा था। महादजी सिंधिया ने 2 वर्ष तक इस पद पर रहते हुये काफी हद तक मुगल आर्थिक स्थिति को सही करने का प्रयास किया गया। इसके बाद उनके शत्रुओं जैसे–राजपूतों, रूहेलों, नवाब, वजीर और ब्रिटिश ने मिलकर एक संघ महादजी के विरूद्ध बना लिया था। जिससे मजबूर होकर महादजी को उत्तर भारत से दक्कन की ओर लौटना पड़ा। (32)

वैसे महादजी सिंधिया के पास रानेखाँ अम्बूजी इंगले, रायवी पाटिल, जीवा दास बरभी, खाण्डेराव हरि, देवजी गाउली और लाडो जी देशमुख जैसे मजबूत मराठा सरदारों की मण्डली थी। इसके अलावा उन्होंने योग्य फ्रेंच सैनिक डी बोइग्ने की महादजी सिंधिया को सेना में कार्यरत थे। इन्हीं की सहायता से पुनः महादजी सिंधिया ने अपनी स्थिति को मजबूत बनाया और मुगल बादशाह की सहायता के लिये उत्तर भारत की ओर कूच किया। (33) गुलाम कादिर नाम रूहेला सरदार ने महादजी की अनुपस्थिति में दिल्ली दरबार में बादशाह व वहाँ की महिलाओं के साथ काफी अत्याचार किये। गुलाम कादिर द्वारा बादशाह को अन्धा करके और सब समान लूटकर दिल्ली से भाग गया था।

महादजी सिंधिया ने गुलाम कादिर को पकड़ने का दायित्व रानेखाँ को सौंपा। रानेखाँ ने सर्वप्रथम दिल्ली की व्यवस्था को सही किया और बादशाह को गद्दी पर पुनः बैठाया गया। इसके बाद वह गुलाम कादिर को पकड़ने की ओर चल पड़ा। 19 दिसम्बर 1788 ई. को शामली (उत्तर प्रदेश) के पास से गुलाम कादिर को पकड़ लिया और 4 मार्च 1789 ई. को बादशाह के आदेश से महादजी ने इसे अन्धा करके प्राण दण्ड दे दिया। (34)

इस कार्य से खुश होकर बादशाह ने महादजी सिंधिया को दिल्ली के आस–पास का क्षेत्र प्रदान किया लेकिन यह क्षेत्र मुगलों के हाथ से जा चुका था। इस क्षेत्र पर, सिखों, रूहेलों, मुगल कमाण्डर, राजपूतों एवं भट्टियों ने अधिकार कर लिया था। महादजी सिंधिया ने एक एक करके इन सभी स्थानीय शक्तियों को पराजित करके सम्पूर्ण क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। महादजी ने इस क्षेत्र में एक उत्तम प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। (35)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

12 जून 1792 ई. को महादजी सिंधिया उत्तर भारत की सभी व्यवस्थाएँ सही करके दक्षिण की ओर पुनः लौट गये। यहां आने का उनका प्रमुख उद्देश्य पेशवा को उनके द्वारा लाये गये बहुमूल्य उपहार एवं सनदें देना था।

11 फरवरी 1794 ई. को उनकी तबीयत अचानक ज्यादा विगड़ गई उन्हें कई दिनों से तेज ज्वर हो रहा था 12 फरवरी 1794 ई. को इस महान् मराठा सरदार महादजी सिंधिया का बनोली नामक स्थान पर देहान्त हो गया। (36) इनका कोई पुत्र न होने के कारण इनके बड़े भाई तुकोजी के पोते दौलतराव सिंधिया को इनका उत्तराधिकारी बनाया गया जो कि एक अयोग्य शासक साबित हुआ। (37)

संदर्भ सूची :

1. श्रीयुक्त सम्पूर्णानन्द, महाराजा महादजी सिंधिया, पृ. सं.– 19
2. एन. जी. राठौड, दी ग्रेट मराठा, पृ.स.–1
3. श्रीयुक्त सम्पूर्णानन्द, उपर्युक्त, पृ.स.–19
4. एन.जी राठौड, पूर्वोद्धृत, पृ.स.–2
5. श्रीयुक्त सम्पूर्णानन्द, उपर्युक्त, पृ.स.–19
6. वही., पृ.स.–20
7. वही., पृ.स.–21
8. गोविन्द सखाराम सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास, खण्ड–2, पृ.स.–520
9. वही., पृ.स.–536
10. जेम्स ग्रान्ट डफ, मराठों का इतिहास (हिन्दी अनुवाद कमलाकर तिवारी) पृ.सं. 436
11. सी.ए. किनकैड एंड डी.पी. पारसनिस, ए हिस्ट्री ऑफ दी मराठा पीपल, भाग–3, पृ.सं. 98
12. गोविन्द सखाराम सरदेसाई, पूर्वोद्धृत, भाग–2, पृ.सं. 536
13. सी.ए. किनकैड एंड डी.पी. पारसनिस, ए हिस्ट्री ऑफ दी मराठा पीपल, भाग–3, पृ.सं. 99
14. जेम्स ग्रान्ट डफ, पूर्वोद्धृत, पृ.सं. 439
15. श्री युक्त सम्पूर्णानन्द, पूर्वोद्धृत, पृ.सं. 28–29
16. वही, पृं. सं. 28
17. कलेंडर ऑफ पर्शियन कोर्सपोंडेस, जिल्द–3 पृ.सं. 605
18. अनिल चन्द्र बैनर्जी, पेशवा माधवराव प्रथम, पृ.सं. 173
19. कलेंडर ऑफ पर्शियन कोर्सपोंडेस, जिल्द–3 पृ.सं. 632–649
20. अनिल चन्द्र बैनर्जी पूर्वोद्धृत, पृ.सं. 173
21. गोविन्द सखाराम सरदेसाई, पूर्वोद्धृत, भाग–2, पृ.सं. 542–543
22. सी.ए. किनकैड और डी.वी पारसनिक, पुर्वोद्धत पृ.सं. 100
23. गोविन्द सखाराम सरदेसाई, पूर्वोद्धृत, भाग–2, पृ.सं. 543
24. वासुदेव वामन खरे, ऐतिहासिक लेख संग्रह, भाग–4, पृ. सं. 1888
25. गोविन्द सखाराम, सखेसाई, सलैक्शन फरोम पेशवा दफ्तर,जिल्द–29, पृ.सं. 337–340
26. जेम्स ग्रान्ट डफ, पूर्वोद्धृत, पृ.सं. 443

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

27. गोविन्द सखाराम सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास, भाग–3, पृ. सं–32
28. गोविन्द सखाराम सरदेसाई, पूर्वोद्धृत पृ.सं. 117
29. वहीं,
30. वहीं, पृ.सं. 77
31. सर जदुनाथ सरकार, मुगल साम्राज्य का पतन भाग–3 पृ.सं. 181
32. डॉ. के.सी. यादव, हरियाणा का इतिहास पृ.सं. 376
33. डॉ. मथुरालाल शर्मा, मराठों का सक्षिप्त इतिहास, पृ.सं. 379
34. पूना रेसिडेंसी कोर्सपोंडेस, वॉल्यूम–1 पत्र संख्या 241 पृ.स. 335
35. डॉ. के.सी. यादव, हरियाणा का इतिहास पृ.सं. 260
36. श्रीयुक्त सम्पूर्णानन्द, पूर्वोद्धृत पृ.स. 95–96
37. सर जदुनाथ सरकार, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, खण्ड–4, पृ.सं. 238